अनुशंसा

हम अनुशंसा करते हैं कि श्रीमती नीलारानी अभयराज गायकवाड का एम्.फिल्.(हिन्दी) का लघु-शोध-प्रबंध "आषाढ़ का एक दिन" और "आठवाँ सर्ग" में चित्रित कालिदास" परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

डॉ.गजानन शंकर सुर्वे
शोध-निर्देशक,
रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा (महाराष्ट्र)

प्राचार्य पुरुषोत्तम श्रेठ
प्राचार्य,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा

Lal Bahadur Shastri College Satara

शिवाजी विद्यापीठ हिन्दी विभाग कोल्हापुर

24/6/96
अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विद्यापीठ,
कोल्हापुर - ४१६००४

डॉ·गजानन शंकर सुर्वे
एम्·ए·,पीएच्·डी·
रीडर एवं अध्यक्ष,हिन्दी विभाग
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय
सातारा-415 002 (महाराष्ट्र)

स्नातकोत्तर अध्यापक,हिन्दी
शोध-निर्देशक,हिन्दी
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर

191-बी, गुरूवार पेठ,
दोशी बिल्डिंग
सातारा-415 002
(महाराष्ट्र)

प्र मा ण प त्र

मैं डॉ·गजानन शंकर सुर्वे, रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा, प्रमाणित करता हूँ कि श्रीमती नीलारानी अभयराज गायकवाड ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्·फिल्·(हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध "आषाढ़ का एक दिन" और "आठवाँ सर्ग" में चित्रित कालिदास" मेरे निर्देशन में बड़े परिश्रम के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया है। जो तथ्य प्रबंध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। श्रीमती नीलारानी गायकवाड के शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह से संतुष्ट हूँ।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध कला-विद्या-शाखा के अन्तर्गत हिन्दी विषय से संबंधित नाटक-विधा में सन्निविष्ट है।

सातारा
29 जून 1996

डॉ·गजानन शंकर सुर्वे
शोध-निर्देशक के हस्ताक्षर

"आषाढ़ का एक दिन" और "आठवाँ सर्ग" में चित्रित कालिदास

प्र स्था प न

यह शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्.फिल्.हिन्दी के प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

N.A. Gaikwad

सातारा

29 जून 1996

श्रीमती नीलारानी अभयराज गायकवाड

शोध-छात्रा के हस्ताक्षर

"आषाढ़ का एक दिन" और "आठवाँ सर्ग" में चित्रित कालिदास

प्रा क्क थ न

संस्कृत कविकुलगुरू कालिदास भारत-भारती के मुकुटमणि हैं। कवि और नाटककार के रूप में विश्वविख्यात हैं। उनकी काव्य-प्रतिभा तथा नाट्य सृजनशीलता असाधारण है। उनके साहित्य के प्रेरणास्त्रोत प्राकृतिक सौन्दर्य और सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय "विक्रमादित्य" की पुत्री प्रियंगुमंजरी है। उनके साहित्य में गुप्तकालीन स्वर्णयुग का स्वर्णिम चित्र यत्र-तत्र दिखाई पड़ता है। "ऋतुसंहार" कालिदास की प्रथम काव्य-रचना है जिसमें षड़ऋतुओं का मनोहारी चित्र मिलता है। "मेघदूत" के यक्ष का विलाप और "रघुवंश" के अज का विलाप वियोग श्रृंगार के हृदयद्रावक चित्र हैं। "कुमारसम्भव" के आठवें सर्ग में उमा और महादेव की प्रणय-क्रीडाएँ संयोग-श्रृंगार का उद्दाम रूप हैं। कालिदास का "अभिज्ञानशाकुन्तल" नाटक तो संस्कृत नाट्य-साहित्य की सर्वश्रेष्ठ और लोकप्रिय कलाकृति है जिसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करने में विदेशी भी न चुके हैं। अमर कवि की यह अमर रचना है। कालिदास के इस महिमा-मण्डित व्यक्तित्व और कृतित्व से अनेक महानुभाव प्रभावित हुए हैं। स्वातंत्र्योत्तर नाटककारों में मोहन राकेश ने "आषाढ़ का एक दिन" और सुरेन्द्र वर्मा ने "आठवाँ सर्ग" में कालिदास को चित्रित किया है अतः इन दो नाटकों में चित्रित कालिदास का विवेचन-विश्लेषण करना और तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना हमारा प्रतिपाद्य है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध छः अध्यायों में विभाजित है।

अध्याय : 1

प्रस्तुत अध्याय का शीर्षक "कालिदास : व्यक्ति परिवेश और साधना" है, जिसके अन्तर्गत कालिदास का जीवन-वृत्त कालिदास का आविर्भाव, जन्मस्थान आदि बातें अनुस्यूत हैं। कालिदास की साहित्य-साधना की पृष्ठभूमि- राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा साहित्यिक आदि का विवेचन किया गया है। कालिदास के काव्य-ग्रन्थ "ऋतुसंहार", "मेघदूत", "रघुवंश", "कुमारसम्भव" तथा नाट्यग्रंथ "मालविकाग्निमित्र", "विक्रमोर्वशीय" एवं "अभिज्ञानशाकुन्तल" का सामान्य परिचय देकर कालिदास की काव्य तथा नाट्यकला पर भी प्रकाश डाला गया है।

अध्याय : 2

प्रस्तुत अध्याय "नाटक में पात्र-सृष्टि और चरित्र-चित्रण" नाम से अभिहित है। इस अध्याय में नाटक का महत्व नाटक के भारतीय और पाश्चात्य तत्वों का उल्लेख; पात्र, शब्दप्रयोग, साहित्य में पात्र का महत्व, नाटक में पात्र एवं चरित्र-चित्रण-विधि, चरित्र और मनोविज्ञान, पात्र और संवाद, चरित्र-सृष्टि और रंगमंचीयता आदि का तात्विक विवेचन किया गया है। साथ ही "आषाढ़ का एक दिन" और "आठवाँ सर्ग" में चित्रित कालिदासेतर पात्रों का संक्षिप्त परिचय विषय-वस्तु की पृष्ठभूमि के रूप में संक्षेप में दिया गया है।

अध्याय : 3

प्रस्तुत अध्याय "आषाढ़ का एक दिन" में चित्रित कालिदास" शीर्षक से अभिहित है। इस अध्याय में नाटककार मोहन राकेश के "आषाढ़ का एक दिन" में चित्रित कालिदास का जीवन-वृत्त, कालिदास और नायिका मल्लिका का प्रणय बंध, कालिदास और राजनीति, कालिदास की साहित्य-साधना, कालिदास के व्यक्तित्व के अन्य पहलू, कालिदास के चरित्र-चित्रण की विधियाँ तथा शैलियाँ विवेचित हैं। इतना ही नहीं, समीक्षकों की निगाहों में दिखाई देने वाले कालिदास को तथा रंगमंच पर दिखाई देने वाले कालिदास के अभिनेयता को विवेचित किया गया है और साथ ही दर्शकीय संवेदनाओं को भी समाविष्ट किया गया है।

अध्याय : 4

प्रस्तुत अध्याय "आठवाँ सर्ग" में चित्रित कालिदास" नाम से अभिहित है। नाटककार सुरेन्द्र वर्मा के "आठवाँ सर्ग" में चित्रित कालिदास का जीवनवृत्त, कालिदास की साहित्य साधना, साहित्य और राजनीति, साहित्य में अश्लीलता का प्रश्न, न्यायसमिति का गठन, साहित्यकार की आत्माभिव्यक्ति का प्रश्न, तथा कालिदास के व्यक्तित्व के कुछ अन्य पहलुओं पर भी प्रकाश डाला गया है। इतना ही नहीं, चरित्र-चित्रण की विधियाँ और शैलियाँ भी विवेचित हैं। समीक्षकों की निगाहों में भी कालिदास के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला गया है साथ ही रंगमंच पर दिखाई देने वाले कालिदास का विवेचन किया गया है। निदेशकीय और दर्शकीय संवेदनाओं को भी समाविष्ट किया गया है।

अध्याय : 5

प्रस्तुत अध्याय का शीर्षक "कालिदास : तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य" है। इस अध्याय के अंतर्गत कालिदास की चरित्र-सृष्टि में नाटककार मोहन राकेश, सुरेन्द्र वर्मा तथा निदेशकों का दृष्टिकोण वर्णित है। कालिदास का जीवनवृत्त, आविर्भाव, कालिदास के चित्रण में इतिहास-दृष्टि, कालिदास की साहित्य-साधना के अंतर्गत प्रेरणास्त्रोत, साहित्य और राजनीति आदि पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। रंगमंचीय बोध के अंतर्गत मंचसज्जा, अभिनेयता और दोनों नाटकों में चित्रित कालिदास की रंगमंचीय प्रस्तुति को स्थान दिया गया है। इन सभी मुद्दों को ध्यान में रखकर तुलनात्मक विवेचन इस अध्याय की विशिष्टता है।

अध्याय : 6

प्रस्तुत अध्याय का शीर्षक "समापन" है। इस अध्याय में शोध-प्रबंध का सार तथा विवेच्य नाटकों में चित्रित कालिदास का मूल्यांकन किया गया है।

कृतज्ञता-ज्ञापन

प्रस्तुत शोध-प्रबंध वन्दनीय गुरुवर डॉ. गजानन सुर्वे, रीडर एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा (महाराष्ट्र) के निर्देशन

में लिखा है। अपने व्यस्त जीवन प्रवाह में भी विषय चयन से लेकर शोध-कार्य की सम्पूर्ति तक उन्होंने आत्मीयता से मौलिक मार्गदर्शन किया है। शोध-प्रबंध की पूर्ति का श्रेय उन्हीं के मार्गदर्शन का फल है। अपने निजी ग्रंथालय से समय-समय पर अध्ययन के लिए किताबें देकर उपकृत किया है। अतः मैं उनकी बहुत ऋणी हूँ।

प्रस्तुत शोध-कार्य में गुरूपत्नी वात्सल्यमूर्ति सौ॰देवलता सुर्वे, गुरूकन्या कामायनी सुर्वे, उत्साह मूर्ति प्राचार्य पुरूषोत्तम शेठ, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा के प्रा॰जे॰आर॰जाधव आदि मुझे इस कार्य को पूरा करने के लिए प्रेरणा देते रहें। उनकी सत्प्रेरणा के लिए मैं उनकी शुक्रगुजार हूँ। डॉ॰पी॰एस॰पाटील, रीडर एवं अध्यक्ष, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, डॉ॰अर्जुन चव्हाण के सहयोग के लिए आभारी हूँ।

पाठशाला से लकर आज तक जिन्होंने मुझे सदैव प्रेरणा दी, मेरा हौसला बढाया, जिसके कारण मेरे जीवन को एक नई दिशा मिली, वे मेरे गुरूवर आमदार श्री॰सुरेशरावजी पाटील तथा उनकी पत्नी श्रीमती सुषमा पाटीलजी की मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ।

शोध-कार्य में मेरी सहायता करने वाले उपर्युक्त महानुभावों के अतिरिक्त मेरे परिवार के सदस्य मेरे पूज्य श्वशुर श्री॰नारायण गोविंद गायकवाड (मुख्याध्यापक महामंडल के माजी सेक्रेटरी तथा श्री॰भवानी विद्यामंदिर के प्राचार्य), मेरी सासजी श्रीमती शुभदा नारायण गायकवाड तथा मुझे अधिक से अधिक पढ़ाने की जिद रखने वाले मेरे पूज्य पिताजी श्री॰पंढरीनाथ नामदेव यादव तथा मेरी स्नेहशील माँ वंदना यादव आदि सदस्यों का भी मुझे अनमोल सहयोग मिला।

मेरे पति श्री॰अभयराज नारायण गायकवाड जिन्होंने मुझे शोध-प्रबंध का कार्य पूरा करने की प्रेरणा दी और अपने कार्य में व्यस्त होते हुए भी मेरी मदद की इसीलिए मैं उनकी अधिक शुक्रगुजार हूँ।

इसके साथ ही साथ मेरे देवर प्रा॰श्री॰महेश गायकवाड तथा गिरीश गायकवाड, मेरे भाई श्री॰जितेंद्र यादव और रवींद्र यादव आदि ने भी मेरे शोध-कार्य में मेरी सहायता की।

मेरे अध्ययन के लिए समय-समय पर मुझे संदर्भ-ग्रंथ ढूँढकर देने वाले लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा के ग्रंथपाल श्री·एस·ई·जगताप और ग्रंथालय के अन्य कर्मचारी आदि के प्रति मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ। इनके अतिरिक्त गुरूवर श्री·ए·बी·पाटीलजी तथा गुरूवर श्री·धनवेंजी की भी मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ।

अंत में आत्मीयता और तत्परता से सुचारू रूप में प्रबंध का टंकन-लेखन करने वाले श्री·मुकुन्द ढवले और उनके सहायक श्री·सुशीलकुमार कांबले और राजू कुलकर्णी की अमूल्य सहायता के लिए मैं हमेशा कृतज्ञ रहूँगी।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में मैंने जिन ग्रन्थकारों के ग्रंथों का उपयोग किया है, उन सभी ग्रन्थकारों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

N.A. Gaikwad.

§श्रीमती नीला अभयराज गायकवाड§
शोध-छात्रा

"ओंकार" 9,
बापूजी सालुंखे नगर,
कोडोली, खिंडवाडी,
सातारा-415 002
§महाराष्ट्र§